श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - ७

दिसम्बर २०२१

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. ..... सूत्र में चंद्र सूर्य वगैरह के पूर्वभव आदि का वर्णन किया गया है ।
२. श्री ..... जिनालय की प्रतिष्ठा शत्रुंजयगिरी पर पू. जयसिंह सूरि के उपदेश से श्रेष्ठि गोविन्द शाह ने करायी ।
३. क्षपक श्रेणी पर आरुढ हुये क्षपक महात्मा को ..... गुणस्थान नहीं होता ।
४. श्री..... का पूजन करते समस्त प्रकार के उपसर्ग नाश हो जाते है ।
५. ..... याने कौन से जीव कितने और किस किस दिशा का आहार लेते है ।
६. अष्ट मंगल में तीसरे नंबर पर ..... मांगलिक आता है ।
७. पैतालीस आगम सत्य है ..... हैं केवली श्रीतीर्थंकर भगवंतो के कहे हुये है ।
८. वैमानिक देवों का जघन्य आयुष्य..... का होता है ।
९. ..... श्री जिनेश्वर की स्नात्रक्रिया प्रसंग पर विविध प्रकार के नृत्य करते हैं रत्न और पुष्प की वर्षा करते हैं ।
१०. आज पंचम काल में भी तैरना हो तो तैरा जा सकता है और इसके आधार स्तंभ है..... एंव जिनप्रतिमा ।
११. जयसिंह को ..... गाथाये मात्र एक बार पढने से ही उसे कंठस्थ हो गई ।
१२. सर्व ..... संज्ञा रहित होते हैं ।
१३. मैं श्री अरिष्ट नेमि तीर्थंकर की माता ..... तुम्हारे नगर में रहती हूँ ।
१४. गर्भ का कालमान, देह रचना एंव युगलिक पुरुष आदि का वर्णन ..... पयन्ना में है ।
१५. ..... गुणस्थान में क्षायिक सम्यग दर्शन तथा यथाख्यात चारित्र होता है ।
१६. सम्यगदर्शन वाले श्रावक और साधु की संज्ञा ..... संज्ञा कहलाती है ।
१७. तेइन्द्रिय को ..... पर्याप्ती होती है ।
१८. हस्ती तुंड में ..... प्रभु का प्रासाद कटारमल ने पू. जयसिंहसूरि के उपदेश से बंधवाया जो आज मुछाला महावीर के नाम से प्रसिद्ध है ।
१९. सर्व धर्मो में श्रेष्ठ ऐसा ..... सदा जयवंता है ।
२०. नवमे गुणस्थान के चौथे भाग में ..... खपाते हैं ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. संपराय याने क्या ?
२. शांति कलश किस हाथ में ग्रहण करते है ?
३. श्री जयसिंहसूरि ने वि.स. १२२९ का चातुर्मास कहाँ किया ?
४. मनुष्यों को कौन सी संज्ञा होती है ?
५. नवमें गुणस्थान का नाम क्या है ?
६. कौनसे झरने में स्नान करने वाली प्रत्येक आत्मा पवित्र बनकर अनेको को पावन करती है ?
७. कौनसी गति में किस किस गति में से जीव आता है, वह क्या कहलाती है ?
८. श्री जयसिंह सूरि का प्रसिद्ध विशेषण कौन सा है ?
९. सयोगी गुणस्थान पर कौन से कर्म का क्षय हो गया है ?
१०. शांति कलश का पानी कहाँ लगाना चाहिये ?
११. कौन सा अंग विच्छेद हो गया है ?
१२. वर्धमान तप का विवेचन किस आगम में है ?
१३. परमात्व द्रव्य के पर्याय को अथवा उसके कोइ एक गुण का निश्चय करके उसका चिंतन करना यह कैसा ध्यान है ?
१४. सूरि के उपदेश से लूट और जीवहिंसा का त्याग करके जैनधर्म किसने स्वीकारा ?
१५. कौनसे जीवों की प्रत्येक क्रिया मोक्ष लक्षवाली होती है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) प्राप्नोति २) पुष्प वस्त्र ३) भयणा ४) क्षपयित्वा ५) वर्षं ६) विगले ७) हि ८) रहित ९) भणिस्सामी १०) चउविह ११) दीह १२) कौविदेः १३) निरत १४) तिरि १५) अेषा १६) त्रिषष्ठि १७) इति १८) तुम्ह १९) पठन्ति २०) अस्तु

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) मनुष्य	२) पुण्यतिलकसूरि	६) तिर्यंच पंचेन्द्रिय	६) छः पर्याप्ति
२) दृष्टिवाद	२) पुष्पवर्षा	७) अंतिम आराधना	७) विच्छेद
३) जिन पूजन	३) सवामण सुवर्ण के शांतिनाथ	८) सोमचंद	८) दृष्टिवादोपदेशि की संज्ञा
४) देवता	४) वीतराग .	९) स्नात्रक्रिया	९) चार प्रकार के देव
५) वल्लभी शाखा	५) भक्ति परिज्ञा पयन्ना	१०) क्षपक	१०) विघ्न रुपी बेलों का छेदन

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. छेद सूत्र कितने है ?
२. बृहद शांति की कुल गाथायें कितनी ?
३. पू. जयसिंहसूरि को आचार्य पदवी कौन से विक्रम संवत में मिली ?
४. नवमे गुणस्थानक के प्रथमभाग में साधक कितनी प्रकृति का क्षय करता है ?
५. संज्ञा बिना के दंडक कितने हैं ?
६. क्रियावादि के कितने भेद हैं ?
७. क्षीणमोह गुणस्थानक के अंत में कितनी प्रकृति का उदय होता है ?
८. सभी जीवों को कितनी दिशा का आहार होता है ?
९. सूक्ष्म संपराय गुणस्थानक पर सत्ता में कितनी प्रकृति होती है ?
१०. पू. जयसिंह सूरि का आयुष्य कितने वर्ष का था ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. महायति अर्थात यथाख्यात चारित्र वाला होता है ।
२. जयसिंग को दीक्षा देकर उसका नाम यशचन्द्र रखा गया ।
३. आगम आत्मा को दश शल्य से मुक्त बनाने वाले हैं ।
४. शुक्लध्यान की शुद्धि मुक्तिरुप लक्ष्मी के सुख को बतानेवाली है ।
५. केवल वर्तमान का ही विचार करे वह दीर्घकालिकी संज्ञा है ।
६. जिनेश्वर देव के पूजन करते मन सुख, शाता और शांति पाता है ।
७. जालिकुमार और धन्य मुनि के चरित्र श्री ज्ञाता सूत्र में हैं ।
८. "युगादि देव चरित्र" ग्रंथ हर्षशाखा के छत्रहर्षसूरि ने लिखा है ।
९. स्थूल नही पर सूक्ष्म अंश जहाँ कषाय का है वह सूक्ष्म संपराय गुणस्थान है ।
१०. प्रज्ञापना सूत्र में जीवों की प्रज्ञापना, स्थान वगैरह ३६ पदार्थो का वर्णन चौवीस दंडक में जमा कर किया है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. "अद्‌बुदजी, यात्रा सफल"
२. अखिल (संपूर्ण) विश्व का कल्याण हो । सभी परोपकार में तत्पर बनो ।
३. आगम निर्वाणरुपी नगर तक पहुँचने के मार्गरुप कहलाते हैं ।
४. यह शुक्लध्यान पतनशील है फिर भी अत्यन्त विशुद्ध है ।
५. महान बनने के लिये सर्जित बालक की इच्छा के आडे कोई माँ बाप आते हैं क्या ?
६. यह ध्यान ऐसा है कि जिसमें वर्ण और अर्थ में कहाँ भी परिवर्तन नहीं है ।
७. पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, उर्ध्व और अधो ऐसी छह दिशायें है ।
८. लालन पुत्र से उनके वंशज लालन गोत्र से सुप्रसिद्ध हुए ।
९. वैमानिक देवता का जघन्य आयुष्य ऐक पल्योपम है ।
१०. संसार के मायाजाल में जीव कैसे फंसता है और उसमें से कैसे मुक्त हो सकता है उसकी तत्वज्ञान से भरपूर विचारधारा है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. स्नात्रक्रिया और शांतिकलश २) कोटडा के सोमचंद राजवी ३) संज्ञा द्वार
४. अेकत्व, अविचार, सवितर्क शुक्लध्यान ५) आगमों का महत्व और वर्गीकरण ।

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com